ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE
24, AKBAR ROAD, NEW DELHI
COMMUNICATION DEPARTMENT

Highlights of Press Briefing **07 Aug, 2020**

Shri Pawan Khera, Spokesperson, AICC, addressed the media via video conferencing today.

श्री पवन खेड़ा ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने अपनी एक छवि बनाई, वो एक ऐसे प्रखर वक्ता की छवि थी, जो 2014 से पहले देश की सीमाओं को लेकर या अन्य मुद्दों को लेकर दहाड़ते थे, एक ऐसी छवि बनाई कि वो दहाड़ते हैं। इस छवि को बनाने में जाहिर सी बात है कि कई कंपनियां शामिल हुई, करोड़ों का खर्चा हुआ, करोड़ों का निवेश करना पड़ता है ऐसी छवि बनाने के लिए। किसी की छवि बिगाड़नी हो तब भी निवेश करना पड़ता है, किसी की छवि बनानी हो तब भी निवेश करना पड़ता है, इस निवेश में भारतीय जनता पार्टी बड़ी काबिल है और इस छवि का लाभ भी हुआ, चुनाव में विजय हासिल हुई, कई बार इनको विजय हासिल हुई, राज्यों में हुई, केन्द्र में हुई। तो जो व्यक्ति इस छवि की वजह से प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हो, जब वो व्यक्ति चीन के मामले पर चुप्पी साध जाता है, तो सवाल उठते हैं, अत्यंत गंभीर सवाल उठते हैं। या तो चुप रहते हैं और या जब बोलते हैं चीन के मुद्दे पर तो गुमराह करते हैं देश को, गलत बयानी करते हैं देश के सामने, कहते हैं ना कोई घुसा, ना कोई घुसा हुआ है और उस बयान को संभालने के लिए फिर तमाम तरह के मंत्री, विभाग सब जुट जाते हैं कि नहीं ये बोला, नहीं ये नहीं कुछ और बोला, लेकिन क्लीन चिट तो क्लीन चिट होती है। सबके सामने विश्व के सामने प्रधानमंत्री जी ने चीन को क्लीन चिट दी। कल क्या हुआ, आपने देखा कि रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट से एक डॉक्यूमेंट, एक कागज, एक नोट जिसमें कि चीन किस तरह से घुसपैठ कर रहा है हमारी सीमाओं में लद्दाख में, उसका वर्णन किया गया था। वो डॉक्यूमेंट रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट से गायब कर दिया जाता है, हटा दिया जाता है, उड़ा दिया जाता है। ये भी हमने देखा। हमने यह भी देखा कि कैसे PM CARES Fund में चीन की विवादित कंपनियों द्वारा जो पैसा आया है उन सवालों पर भी प्रधानमंत्री चुप रहते हैं।

पूरा देश तब हैरान हो जाता है जब मोदी जी एवं उनके सहयोगी उन लोगों को लाल आंख दिखाते हैं जो मोदी जी को अपना राजधर्म याद दिलाने की कोशिश करते हैं और उनसे निवेदन करते हैं कि मोदी जी देश की सीमाओं की रक्षा कीजिए चीन को लाल आंख दिखाइए। आपकी ऐसी क्या मजबूरी है, ऐसी कौन सी कमजोरी है कि आप चीन के सामने नतमस्तक हो जाते हैं, आंखे मूंद लेते हैं एवं चुप हो जाते हैं।

हिन्दुस्तान ने सोचा था कि एक मज़बूत प्रधानमंत्री चुना जा रहा है, हिन्दुस्तान हैरान है यह देखकर कि इनसे ज्यादा मजबूर प्रधानमंत्री इतिहास ने नहीं देखा। मोदी जी, हम यह जानना चाहते है कि आप की मजबूरी क्या है ? कुछ लोग आप की इस रहस्यमयी चुप्पी के पीछे आपका गुजरात के मुख्यमंत्री का कार्यकाल

बताते हैं, जब आप बार-बार चीन चले जाया करते थे, जब आप गुजरात के स्कूलों में चीनी (mandarin) भाषा सिखाए जाने की पुरजोर वकालत करते थे, जब आप चीन की कंपनियों के लिए गुजरात में गर्मजोशी से स्वागत करते थे।

कुछ लोग बताते हैं कि जब से आप प्रधानमंत्री बने हैं तब से आपकी चीनपरस्त नीतियां और अधिक उबाल पर रही। जब आप चीन जाने के बहाने ढूंढते रहे, जब आपने हर क्षेत्र में चीनी निवेश के लिए दरवाजे खोल दिए। और अब यह जानकारी सामने आती है कि 2019 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने चीन की सहायता ली। चीन की जिन कंपनियों का सीधा-सीधा संबंध PLA से है ऐसा आपकी सरकार ने अभी जुलाई में बताया, उन्ही कंपनियों की सहायता से आपने चुनाव लड़ा। जब यह जानकारी सामने आती है, तब देश को तमाम सवालों के जवाब मिलने लग जाते हैं। वो सवाल, जो आपकी चुप्पी से जन्म लेते हैं, उनका जवाब इन तथ्यों से उजागर हो जाता है UC Web Mobile नामक कंपनी जिस पर जुलाई में आपने पाबंदी लगाई, 2019 में इसी कंपनी की सेवाएं आपकी अपनी पार्टी, भारतीय जनता पार्टी ने ली। यह तथ्य आपके अपने चुनाव व्यय रिपोर्ट में उजागर होता है। (संलग्न1)

जिस UC Web Browser पर 2017 में आप ही की सरकार ने हिन्दुस्तानियों का डाटा चुराकर चीन भेजने का आरोप लगाया था(संलग्न2), आखिर आपकी क्या मजबूरी थी कि उसी कंपनी को 2 साल बाद 2019 में चुनाव में अपने प्रचार के लिए लाया गया ?

दूसरी कंपनी, Gamma Gaana Limited (Tencent of China) नामक इस कंपनी के एक निदेशक का नाम है Po ShuYueng. यह व्यक्ति 10c India Private Limited के भी निदेशक हैं। Gamma Gaana Limited का वित्त पोषण Gamma Gaana Limited द्वारा किया जाता है(संलग्न3)। अभी जुलाई में मोदी सरकार ने देश को यह सूचित किया कि अली बाबा एवं Tencent चीन की People Liberation Army से सीधे-सीधे संबंधित हैं।

ऐसी ही एक और कंपनी ShareIT Technology इस कंपनी पर भी भारत सरकार ने जुलाई में पाबंदी लगा थी, यह कहते हुए कि यह कंपनी भारत की एकता एवं संप्रभुता के लिए खतरा है। हैरानी की बात यह है कि जो कंपनी भारत सरकार के अनुसार भारत की एकता एवं संप्रभुता के लिए खतरा है, वही कंपनी भारत के चुनाव में भाजपा की पाटर्नर बनकर चुनाव पर प्रभाव डालती है। हम प्रधानमंत्री जी से यह जानना चाहते हैं कि ऐसी कंपनी को भारतीय चुनाव जैसे संवेदनशील काम में क्यों इस्तेमाल किया गया ?

आरएसएस के निरंतर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ आदान प्रदान होते रहे, चलिए मान लेते हैं कि एक गैर-राजनीतिक संगठन को चीन से मधुर संबंध स्थापित करने की कोई आवश्यकता रही होगी। इंडिया फाउंडेशन के चीन से रिश्ते भी किसी से छिपे नहीं हैं। विवेकानंद फाउंडेशन जो मोदी सरकार की नीतिगत रीढ़ की हड्डी मानी जाती है, उसके चीन से अंतरंग संबंध जग जाहिर हैं।

किसी भी देश का चुनाव उस देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है और लोकतंत्र का एक पवित्र पर्व होता है। 2019 में चुनाव में एक ऐसा देश जो निरंतर हमारी सीमाओं पर, हमारी जमीन पर आंख गड़ाए बैठा हो, अगर

ऐसे देश की भूमिका हमारे चुनावों में हो, अगर ऐसे देश ने हमारे देश के चुनाव पर प्रभाव डाला हो तो प्रधानमंत्री की चुप्पी का कारण कहीं इस तथ्य में छिपा हो यह सोचने में हम मजबूर हो जाते हैं। कई सवालों के उत्तर मिलते हैं और कई नए सवाल पैदा होते हैं।

प्रधानमंत्री जी, हमारे आपसे सीधे-सीधे सवाल हैं

- **आपका चीन से यह कैसा रिश्ता है ?**
- **इस रिश्ते में आप इतने दबाव में क्यों नजर आ रहे हैं ?**
- **चीन की सरकार के पास आखिर ऐसी क्या जानकारियां हैं जिसकी वजह से आप चुप हैं ?**
- **आपने भारतीय चुनाव में चीन की मदद क्यों ली ?**
- **आपने भारतीय चुनाव में भारतवासियों का डाटा चीन को क्यों दे दिया ?**
- **क्यों आपने ऐसा करके करोड़ों हिन्दुस्तानियों को खतरे में झोंक दिया ?**

प्रधानमंत्री जी, इस देश ने आपको क्या-क्या नहीं दिया। आपको अनेक बार सत्ता से नवाजा, और भरपूर प्यार दिया, सफलता के शीर्ष तक पहुंचाया। ऐसे में जब यह देश आपको चीन के आगे हाथ बांधे, सिर झुकाए देखता है, जब इस देश को यह पता चलता है कि उसके चुनाव में चीन ने प्रभाव डाला तो प्रत्येक हिन्दुस्तानी का दिल कचोटता है।

Shri Pawan Khera said- Our Prime Minister crafted an image for himself – an image of a leader who, before 2014, roared on issues of border security. Several companies were roped in, spending crores of rupees to create this image of Modi ji. The investment paid off and Modi ji and his party got substantial electoral gains too.

Today, we see the same man running for cover when it comes to the issue of Chinese incursions into Indian territory. The Prime Minister either keeps quiet on the issue or misleads the country, gives a clean chit to China by saying 'no one entered our territory…'. So much so, that a document that talks about Chinese transgressions, is removed from the website of the Ministry of Defence. We have also seen the loud silence of the Prime Minister on questions asked about Chinese companies contributing to the opaque PM CARES Fund.

The country is surprised at attempts being made by Prime Minister and his colleagues to intimidate those, who question the Prime Minister on his surrender to China, into silence. Modi ji, we are only reminding you of your Raj Dharma. Your Raj Dharma is to protect the territory and people of India.

When it comes to China, what exactly are your compulsions? Why do you close your eyes and slip into silent mode amidst brazen incursions by China in Ladakh? Some observers attribute this silence to your tenure as Chief Minister of Gujarat, when you would look for excuses to go to China; when you strongly advocated introduction of Mandarin in the curriculum of the state; when you warmly welcomed Chinese companies in Gujarat. Even when you became the Prime Minister, your love for China has been visible to the entire world.

Foreign policy does not mean that the Prime Minister is constantly on aeroplane mode – covering long distances to meet his Chinese counterpart - but when it comes to protecting the territorial integrity of the country, the Prime Minister goes on silent mode.

When explosive information of the ruling Bhartiya Janta Party having partnered with those Chinese companies, who have now been banned by the government for their links with the Chinese establishment, comes in public domain, the country is forced to start seeking answers of your silence in such information.

UC Web Mobile got banned in July this year. In 2019, according to the expenditure report submitted by the BJP to the Election Commission (Annex 1), they hired this very company to run their campaign. It is the same Alibaba owned company – UC Web Browser – which was also red flagged by the Modi govt in 2017 for sending crucial data of Indians to China. (Annex 2)

What was the compulsion of involving the same company for elections, which you had red flagged two years ago?

There is another company called Gamma Gaana Limited (Tencent of China). Po ShuYueng, one of the directors of this company is also the director in 10c India Pvt Ltd. Gamma Gaana Ltd is funded by Tencent (Annex 3). Last month, the Govt banned it saying the company was directly connected with the PLA. This company too was used by the BJP in the 2019 Lok Sabha elections.

The third company called ShareIT Technology has an app called ShareIT which was banned by the government last month for being a threat to the 'sovereignty and integrity of India' was also hired by the BJP in our elections last year. We have seen how a non political organisation called the RSS kept participating in exchange programmes with the Chinese Communist Party; We have also seen the more than cordial relations of the high profile India Foundation with China; The close association the Vivekanand India Foundation (currently plays a critical role in policy formulation) shares with China is well known too. But to involve companies closely linked to the PLA in our elections comes as a shock to every single Indian.

For every country, elections have supreme sanctity. Elections decide the future of every single citizen of the country. To involve a country that has forever been eying our territory, in our elections raises several questions.

We wish to ask some direct questions to the Prime Minister:

- **What exactly is your relationship with China?**
- **Why do you come across as submissive in the relationship with China?**
- **What influence does China wield on our establishment?**
- **Why did your party take the help of China in the Lok Sabha elections?**
- **In doing so, why did you give away vital data of Indian citizens to China?**
- **Why did you compromise the data security and privacy of crores of Indians by involving Chinese companies linked to the PLA?**

The country has given you everything that you wanted and much more. Apart from several electoral victories, India invested its love and hope in you. When India sees its Prime Minister surrender to China, it hurts every single Indian

एक प्रश्न पर कि चीन को लेकर आपने सरकार पर सवाल खड़े किए हैं, परंतु बीजेपी की तरफ से सुप्रीम कोर्ट के एक ऑब्जर्वेशन का हवाला देते हुए कांग्रेस पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं, क्या कहेंगे? श्री खेड़ा ने कहा कि उसमें आपने देखा होगा कि क्या-क्या कहा सुप्रीम कोर्ट ने और किस तरह से उस पर सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणियां की, वो सबने सुनी, तो इस तरह की मिथ्या बातें ये लोग करते रहें, फैलाते रहें, उसमें हम क्या जवाब दें। आज आपके सामने बार-बार हम कई तथ्य सामने रखते हैं, पीएम केयर फंड के तथ्य आपके सामने रखे, प्रधानमंत्री के जो विशेष संबंध हैं चीन से, वो हमने आपके सामने रखे, हमें भी छोड़ दीजिए, हमने जो रखा वो भूल जाइए, प्रधानमंत्री जी की अपनी जो क्लीन चिट जो उन्होंने चीन को दी कि "ना कोई घुसा है, ना कोई घुसा हुआ है", इन शब्दों में सवाल भी हैं, इन शब्दों में जवाब भी हैं। उसके बाद आज जब ये आपके सामने आता है कि कैसे भारतीय जनता पार्टी चुनाव में चीन की सहायता लेती है, इससे ज्यादा गंभीर कुछ हो ही नहीं सकता। आप मुझे बताइए कि हम पर आरोप लगाते हैं, फाउंडेशन पर आरोप लगाते हैं, जो हर चीज सार्वजनिक पटल पर है, उसको लेकर हम पर आरोप लगाते हैं, जमीन आप क्यों दे रहे हैं, आप क्यों सरेंडर कर रहे हैं? हमने तो नहीं किया ना, सरेंडर तो आप कर रहे हैं, सरेंडर भी कर रहे हैं, जमीन भी वो ले रहे हैं, उनको क्लीन चिट भी दे रहे हैं,

उनकी पीठ भी थपथपा रहे हैं, उनकी कंपनियों को भी ला रहे हैं, चुनाव का ठेका भी चीन को दे रहे हैं, इससे ज्यादा गंभीर क्या हो सकता है? ये सवालों से बचना चाहते हैं, इनको मालूम है कि ये सवाल गंभीर है, ये सवाल खतरे की घंटी है सरकार के लिए। इसलिए इन सवालों से बचने के लिए उल जुलूल कुछ भी बोल देंगे, लेकिन इनका उत्तर नहीं देंगे। बताएं, क्यों इन कंपनियों का इस्तेमाल किया? बताएं, क्यों क्लीन चिट दी प्रधानमंत्री जी ने? क्या मजबूरी है प्रधानमंत्री जी की, क्यों चुप हो जाते हैं चीन का नाम आते ही? क्यों चीन का नाम लेने से डरते हैं? हम जानना चाहते हैं प्रधानमंत्री जी से।

On a question about the petition filed in the Supreme Court, Shri Khera said- the Supreme Court has very clearly said what it had to say on this flimsy petition. You also heard it, we also heard it. Fact of the matter is, why is the BJP running away from difficult questions being posed to it, to the party and the Government both by us and by the people like you. Instead of responding to these questions, the most serious question of all is, why did the Prime Minister gave a clean chit to China, why did he mislead the country and I am sorry, why did he lie to the country? Now, to cover that lie, you removed the documents from the website of Ministry of Defence. You are trying to legitimise the lie of the Prime Minister and that lie, mind you give a clear clean chit to China, it embolden China. Instead of countering China, you are trying to find faults, you are trying to question us, just because we are asking tough questions. If we had something to hide, we wouldn't have been asking you tough questions, we wouldn't have been expecting you to respond to China strongly. We wouldn't keep quiet, like you are quiet today.

Today, a party or a person, who is quiet, is the one who has to, has a lot to hide. Not people like us, who are on a daily basis asking tough questions on China. We expect you to have a tough response towards China. It is for everyone to see, who has compromised, the man, who has given a clean chit to China or the people, who asks tough questions on China? I ask you, in your wisdom, tell me.

We exposed the links of the Prime Minister, his Party's close links with companies directly related and controlled by the PLA. You cannot run away through this kind of propaganda, when we are asking you questions on why did you involve China in our elections, nothing can be more serious than involving China in our elections. If you have not compromised with China, why you are surrendering land, why you are giving clean chit to them, why you are involving their companies in our elections, why are you welcoming investments by China in every sector? Why are you taking money from them in PM Cares fund? Why are you unable to respond to a single question? Who has compromised? It is for everyone to see.

एक अन्य प्रश्न पर कि आपने सीधा आरोप लगाया और तथ्य भी रखे, आज जो कानून देश के अंदर है, आप किसी भी देश से किसी भी एनजीओ में पैसा नहीं मंगा सकते, सरकार ने पाबंदी लगा दी है, जिस देश के अंदर लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंदर पूरा पॉलिटिक्ल सिस्टम ही विदेशी कंपनियों के माध्यम से फंडिड हो, तो इस मुद्दे पर कांग्रेस को एक बहुत बड़ा राजनीतिक आंदोलन खड़ा करने की जरुरत है? श्री खेड़ा ने कहा कि आपकी सलाह बहुत अच्छी है, बिल्कुल जायज सलाह है, उसके लिए शुक्रिया, सही सलाह है आपकी। ये गंभीर विषय है। किसी देश के चुनाव की संप्रभुता और उसकी इंटिग्रेटी, अगर उसके साथ समझौता हो जाता है, वो बहुत ही ज्यादा मुझे लगता है अब तक पिछले 3-4 महीने, जब से हम चीन के विषय में बार-बार आपसे रुबरु हो रहे हैं, उसमें सबसे ज्यादा गंभीर बात दो हैं- एक प्रधानमंत्री जी ने जो चीन को क्लीन चिट दे दी कि "कोई घुसा ही नहीं है, हमारे यहाँ कोई घुसा हुआ नहीं है"। दूसरा, चुनाव में आप चीन की उन कंपनियों के हाथ में चुनाव सुपूर्द कर देते हैं, जिन कंपनियों का सीधा-सीधा संबंध पीएलए से है। इससे ज्यादा गंभीर कुछ भी नहीं हो सकता। ये अनरगल बातें करते रहेंगे कि ये फाउंडेशन से ये कर दिया, हमने सबका जवाब दिया, हमारे पास कुछ छुपाने को नहीं है, जिसके पास छुपाने को है, वो छुपा रहे हैं, वो छुपा हुआ है, वो बोल नहीं पा रहा, वो चीन का नाम नहीं ले पा रहा, वो इन्हीं प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पा रहा, वो डॉक्यूमेंट हटा देता है रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट से क्योंकि इससे सच उजागर होता है, वो बड़ा कठिन सच है, उस सच को प्रधानमंत्री स्वयं नहीं देख पा रहे हैं, देखना नहीं चाह रहे हैं। वो सच ये है कि हमारी जमीन पर चीन का कब्जा है, प्रधानमंत्री की नाक के नीचे हुआ है। प्रधानमंत्री चीन का नाम लेने से घबराते हैं, प्रधानमंत्री जी मजबूर हैं।

एक अन्य प्रश्न पर कि जैसा कि आपने आरोप लगाया पीएलए से संबंध रखते हुए जिस कंपनी के हाथ में बीजेपी ने चुनाव को दिया, क्या इसमें चुनाव आयोग की परमिशन शामिल है? श्री खेड़ा ने कहा कि जिन कंपनियों को भारतीय जनता पार्टी ने, जिनके साथ साझेदारी की, जिनको हायर किया, जिनकी सेवाएँ ली गई, उनके भारतीय ऑफिस द्वारा अब उन पर पाबंदी लगाई गई है, वो अलग बात है, जुलाई में उन पर पाबंदी लगी। ये चुनाव आयोग को भी देखना चाहिए कि किस तरह से, क्या उसमें पाबंदी है, क्या उसमें लीगल स्टेटस है, क्या कानूनी वैधता है या नहीं, उस पर मैं टिप्पणी नहीं कर पाऊंगा, लेकिन ये बात तथ्यात्मक है कि जिन कंपनियों का नाम मैंने आपके सामने लिया, उन पर भारत सरकार ने आप जैसे लोगों के दबाव के चलते पिछले महीने पाबंदी लगाई थी। भारत सरकार की जो रुलिंग पार्टी है, भारतीय जनता पार्टी ने पिछले साल इन्हीं कंपनी की सेवाएँ ली चुनाव प्रचार में और वो सेवाएँ लेने के लिए भारतीयों का डेटा इन कंपनियों के मार्फ़त चीन के हवाले कर दिया। ये सब तथ्य है, इन सब तथ्यों पर मैंने प्रेस वार्ता की है। बड़े गंभीर तथ्य हैं, बहुत गंभीर विषय है। किसी देश के चुनाव से ज्यादा महत्वपूर्ण उस देश के लिए, उन देशवासियों के लिए नहीं कुछ हो सकता। अगर वो चुनाव में आपने एक ऐसा देश, उन कंपनियों को साथ में ले लिया, उनसे साझेदारी कर ली, जिस देश के साथ आपके संबंध बहुत मधुर नहीं हैं, जिस देश की आंखे सदैव आपकी जमीन पर गड़ी रहती हैं, तो गंभीर प्रश्न उठते हैं।

एक-एक भारतवासी को ये सो-मोटो देखना पड़ेगा, देख रहा है। एक-एक वोटर देख रहा है, एक-एक हिंदुस्तानी देख रहा है कि किस तरह से प्रधानमंत्री की पार्टी चीन की कंपनियों के साथ साझेदारी करके भारत के चुनाव में उन कंपनियों को लाती है, उनकी भूमिका बना देती है और उसके बाद जब चीन हमारी सीमाओं पर कब्जा करता है, हमारी जमीन पर कब्जा करता है, हमारे सैनिक शहीद होते हैं, तब प्रधानमंत्री चीन के आगे नतमस्तक दिखते हैं, चीन को क्लीन चिट देते हुए दिखते हैं। कहते हैं हमारे क्षेत्र में कोई घुसा ही नहीं है, इससे ज्यादा गंभीर और क्या हो सकता है? प्रत्येक देशवासी को, एक-एक व्यक्ति को सो-मोटो कॉग्निजेंस इसका लेना ही होगा।

On another question about a letter written by a Kerala MP to the Congress President, Shri Khera said- the Congress party is a vast ocean in which a lot of rivers fall, different rivers comes from different directions and fall into this beautiful ocean called the Congress Party. We have our own questions which get responded to within the party; we have different opinions that do not change the opinions prevailing. That is for everyone to see.

The fact that the Congress Party always consistently said on the Ayodhaya issue that the court shall decide and the verdict of the court will be acceptable to all. The rule of law, that is what the Congress party has always been committed to and on this issue the Congress party did not waver from the stand unlike the BJP. If you see the Palanpur resolution of the BJP and see the language of the resolution, they rejected it even before the Court had anything to say.

In the Palanpur resolution, the BJP rejected the role of the court. The same BJP comes around and says in the last three-four years that whatever the Court decide shall be acceptable to all. Who has been inconsistent – the BJP – who did not show any respect to rule of law and the judiciary – the BJP. If you want I will send you the Palanpur resolution – see the last paragraph. The Congress party has been consistent and that is what happened. At the end of the day, how did the issue of Ayodhaya get resolved through a court verdict.

Beyond that I don't see any point of debate left anymore. Let us talk only of facts and facts are for everyone to see. As I said, facts don't change, opinions may vary.

एक अन्य प्रश्न पर श्री खेड़ा ने कहा कि पार्टी टू पार्टी समझौते होते हैं, पार्टी टू पार्टी पार्टनरशिप होती हैं, एक ट्रेक टू जिसे हम कहते हैं, डिप्लोमेसी की भाषा में, क्या प्रजातंत्र कांग्रेस पार्टी नेपाल का जनसंघ से नहीं था पार्टनरशिप, उसमें कुछ गलत आपत्तिजनक नहीं होता, क्योंकि ये ट्रेक टू इसी तरीके से चलता है। संगठनों का आपस में आदान-प्रदान होता है, पार्टियों का होता है, तो इसको आप इस्तेमाल करके आप कठिन सवालों से बचना चाहें मोदी जी, तो बच नहीं पाएंगे। रही बात आप जो मुद्दा उठा रहे हैं, वो चुनाव फंडिंग का मुद्दा है, वो अलग मुद्दा है। चुनाव में पार्टियों को प्रचार का काम सौंप देना, कंपनियों को प्रचार का काम सौंप देना, उन कंपनियों को, जो चीन की पीएलए से संबंधित है, ये अलग मुद्दा है और

बहुत ज्यादा गंभीर मुद्दा है। क्योंकि आज जब चीन की पीएलए से नियंत्रित कंपनियों को प्रचार का काम चुनाव का दे देते हैं, तो आप तब भारतीयों का डेटा भी दे देते हैं, बड़ा क्रिटिकल डेटा होता है, बड़ा महत्वपूर्ण डेटा होता है। आपने अपना चुनाव एक तरह से चीन की पीएलए के नियंत्रण वाली कंपनियों के हाथ में सौंप दिया। किसी बाहरी देश का इस तरह का हस्तक्षेप हमारे चुनाव में, पहली बार ये उदाहरण इस देश ने देखा है, बहुत गंभीर बात है, बहुत ज्यादा चिंता और खेद का विषय है और बड़ी घबराहट हो रही है देश के एक-एक नागरिक को, जो इस बात को समझ पा रहा है कि कैसे एक जिम्मेदार राष्ट्रीय दल, जो अपने आपको राष्ट्रवादी भी बताता है, दम भरता है राष्ट्रवाद का, वो ऐसा काम कैसे कर सकता है कि चीन के पीएलए के नियंत्रण की कंपनियों को भारत का चुनाव सुपुर्द कर दे, ये प्रश्न बहुत गंभीर है।

एक अन्य प्रश्न पर कि कोरोना के मामले में देश 20 लाख का आंकड़ा पार कर चुका है, इसमें सरकार की कार्यवाही कैसे देखते हैं, दूसरी तरफ राहुल गांधी जी ने सवाल उठाए, जिस पर भाजपा की तरफ से जवाब आता है, उस पर क्या कहेंगे,? श्री खेड़ा ने कहा कि अगर फरवरी से लेकर अब तक राहुल गांधी जी के जो सलाह वो ट्वीट के माध्यम से दे रहे थे, अगर वो इस सरकार ने सही वक्त पर सुन ली होती, तो इस सरकार की मायोटिक तो छोड़िए, जो लेक ऑफ विजन है, जो आप सबको दिख रही है, उसका खामियाजा हम सबको नहीं भुगतना पड़ता। भले वो मजदूर जो पैदल चलकर गए उनको, कई लोग जो मारे गए उनको, जिस तरह से जूझ रहा है आज प्रत्येक राज्य कोरोना से, उन सबसे पूछिए, सब बताएंगे। आप किसी भी भाजपा के मुख्यमंत्री से ऑफ रिकोर्ड पूछेंगे, तो वो भी आपको बताएंगे कि the lack of planning. आपने लॉकडाउन से पहले कोई प्लानिंग नहीं की, लॉकडाउन के बाद, जिसको अंग्रेजी में कहते, Knee and Jerk reaction देते रहे, कभी कुछ, कभी कुछ, तो इस सरकार ने कोरोना को जिस तरह से हैंडल किया, जिस तरह से कोरोना से निपटने की कोशिश की गई, उसमें कहीं भी हर जगह सरकार नदारद दिखी। सरकार दिखी ही नहीं। No governance was visible in handling Corona, ये बात स्पष्ट हो गई है। तभी आप 3 नए देशों का नाम ले लेंगे, कि इनसे तुलना करिए, फिर जब आंकड़ा बदल जाता है, फिर 3 नए दूसरे देश ले आते हैं कि इनसे तुलना करिए। तो सरकार राहुल गांधी जी की बात काटने से अच्छा है, जिम्मेदारी से विपक्ष के नेताओं की बातें सुन लेती तो देश का कल्याण होता, देश का भला होता।

कोरोना से संबंधित एक अन्य प्रश्न पर श्री खेड़ा ने कहा कि जिस तरीके से एक तो आप पकड़े जाते हैं रंगे हाथों, कुछ ना करते हुए या गलत करते हुए, उसके बाद आपको जो पकड़ता है, उसको आंख दिखाते हैं। ये इस सरकार की नीति रही है, सदैव से रही है और कोरोना के मामले में भी स्पष्ट तौर से दिख रहा है। राहुल गांधी जी ने आपको चेताया, आगाह किया, फरवरी में आगाह किया कि ये एक सूनामी की तरह आने वाला है, जाग जाइए। आप व्यस्त थे नमस्ते ट्रंप करने में, मार्च में आप व्यस्त थे कमलनाथ जी की सरकार गिराने में, उसके बाद आपने सबको व्यस्त करने की कोशिश की ताली-थाली बजाने में और

दीया जलाने में। कब तक बचेंगे, कब तक ईवेंट मैनेजमेंट का सहारा लेकर असली मुद्दों से बचकर भागेंगे? वो मजदूर आपको माफ नहीं करेंगे, जिनको आपने पैदल सड़क पर बेसहारा छोड़ दिया, वो लोग नहीं माफ करेंगे जो पटरी पर आकर मर गए, वो लोग नहीं माफ करेंगे, जिनकी नौकरी हाथ से चली गई। सोनिया गांधी जी ने आपको पत्र लिखकर सलाहें दी, आपने कुछ मानी, देर से मानी। कुछ मानी, कुछ और मान लेते, डॉयरेक्ट कैश ट्रांसफर की मांग कांग्रेस के तमाम नेता करते रहे, आपने नहीं मानी। आप मनमानी भी करेंगे और जो आपको सही सलाह देने की कोशिश करेंगे, उसको आप बेइज्जत करने की कोशिश करेंगे, उसकी आप हंसी उड़ाएंगे और जब आप फंस जाते हैं, जब संकट एकदम आपके सामने आ जाता है, आपके क्या देश के सामने आ जाता है, तब आप दायं-बांय देखते हैं, फिर ईवेंट मैनेजमेंट लेकर आएंगे, ऐसे काम नहीं चलेगा। ये देश आपसे जवाबदेही की मांग कर रहा है।

Sd/-
(Dr. Vineet Punia)
Secretary
Communication Deptt,
AICC